बोध कथा

एक समय चारिका करते समय तथागत गौतम बुद्ध ने उन भिक्षुओं को, जो साथ में चल रहे थे, सम्बोधित करते हुए कहा -

भिक्षुओं, इस संसार में चार तरह के लोग होते हैं -

1 जिसने न अपना भला किया और न किसी दूसरे का भला किया,
2 जिसने दूसरों का भला किया, किन्तु अपना भला नहीं किया,
3 जिसने अपना भला किया, किन्तु दूसरों का भला नहीं किया,
4 जिसने अपना भला किया तथा दूसरों का भी भला किया।

- जिस आदमी ने न अपना भला करने का प्रयास किया और न दूसरों का भला करने का प्रयास किया वह शमशान की उस लकड़ी की तरह है जो दोनों सिरों पर जल रही है और जिसके बीच में मैला लगा है। वह न गांव में ही जलावन के काम आती है और न जंगल में। इस तरह का आदमी न संसार के किसी काम का होता है, न अपने किसी काम का।

- जो अपनी हानि करके दूसरों का उपकार करता है वह दोनों में अधिक अच्छा है।

- लेकिन भिक्षुओं ! चारों तरह के आदमियों में सबसे अच्छा तो वही है, जिसने दूसरों का भला करने का भी प्रयास किया है और अपना भला करने का भी प्रयास किया है।

संकलनकर्ता: मौहर सिंह, "प्राविधिज्ञ - द्वितीय"